कर्नाटक के माल्पे मात्स्यिकी बंदरगाह पर कोष संपाश के ज़रिए *सार्डिनेल्ला लोंगिसेप्स* का भारी अवतरण

मलबार तट तारली और बाँगडा मत्स्य के लिए सर्व प्रसिद्ध है। अवतरण में वार्षिक उतार-चढाव इस तट की तारली मात्स्यिकी की विशेषता है। कर्नाटक के मांगलूर और माल्पे मात्स्यिकी बंदरगाह तारली अवतरण का मुख्य केंद्र हैं। कुल तारली अवतरण के 40 - 65 % कर्नाटक के माल्पे मात्स्यिकी बंदरगाह का योगदान है। *एस. लोंगिसेप्स* का विदोहन मुख्यतः 10-25 मी गहराई से यंत्रीकृत और मोटोरीकृत मत्स्य यानों द्वारा होता है। राज्य के कुल तारली अवतरण के 90-98% योगदान मुख्यतः कोष संपाश के ज़रिए होता है। कोष संपाश के अलावा, आनाय, वलय संपाश, हस्त आनाय के द्वारा लघु अवतरण भी देखा जाता है। वर्ष के दौरान सितंबर से दिसंबर तक या कभी कभी फरवरी तक की अवधि में तारली का उच्च अवतरण देखा जाता है। माल्पे मात्स्यिकी बंदरगाह में कोष संपाश के ज़रिए तारली का भारी अवतरण 9 और 29, दिसंबर 2009 के दौरान देखा गया। कोष संपाश में तारली की पकड दर इन दिनों के दौरान 2 से 6 गुणा अधिक दर रिकोर्ड करके 5 से 15 ट/यूनिट (प्रति यूनिट 7 ट का औसत) तक बढी। मछली की नीलाम दर 4 से 8 रु तक की रैंच में थी, जिससे 2 दिन में 33 लाख के कुल आय प्राप्त हुआ। तारली का अवतरण बहुमात्रा में होने के कारण इनको मछली आहार उत्पादन के लिए उपयोग किया गया और उदयावार, तोट्टम, मनूर कोटा और पित्रोडी में स्थित मछली मत्स्य चूर्ण प्लांट में भेजा गया।

मानसूनोत्तर मौसम में तट के समीप तारली झुंडों की उपस्थिति एक सामान्य प्रतिभास होने पर भी, तारली के वार्षिक अवतरण के 47% दिसंबर, 2009 के दौरान देखा गया। इस महीने के अवतरण में 40% 0 वय वर्ग की मछलियाँ थी, जो मात्स्यिरी में नयी आयी मछलियों के अभिगट प्रवास की ओर इशारा करती है।

रिपोर्टर

एम. चनियप्पा, उमा एस. भट्ट, गीता शशिकुमार और ए.पी. दिनेशबाबु

सी एम एफ आर आइ मांगलूर अनुसंधान केंद्र, मांगलूर